आज की मुरली का सहज सार ---------- Date: 05-08-14

विश्व की सर्व आत्माओं को मुक्ति और हम बच्चों को जीवन-मुक्ति में ले जाने वाले बेहद के सतगुरु - बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हें खुशी होनी चाहिए कि दुख हरने वाला बाबा हमें सुखधाम में ले जाने आया है, हम स्वर्ग के परीज़ादे बनने वाले हैं.

बाबा ने आज एक बात बार-बार कही कि बाबा सब आत्माओं को वापस घर ले जायेंगे, बाकी अभी थोड़ा समय है, जितना हो सके पुरुषार्थ कर बाप को याद कर अपने जन्म-जन्मांतर के पापों को खलास करो, नहीं तो सजायें खाकर भी पावन बनना पड़ेगा. इसे पद भी कम हो जायेगा. समय के पहले स्व को संपूर्ण बनाओ.

बाबा ने कही बात को ही हम फिरसे ऐसे रिपिट करेंगे, जिसे हमें बाप की याद भी रहे और बाप की कही बात भी याद रहें.

- मीठे ते मीठा बेहद का बाप हमें दुखधाम से निकाल सुखधाम में ले जाने वाला हैं. बाप ही टीचर बनकर हमें सारी सृष्टि का राज समझाते हैं. यह चक्र कैसे फिरता है, 84 जन्म कैसे पास होते हैं - यह सारा चपटी में समझाते हैं. फिर सतगुरु बन कर साथ भी ले जायेंगे. यहाँ तो रहना नहीं है. सभी आत्माओं को साथ ले जायेंगे. बाकी थोड़े रोज हैं. इसलिए जल्दी-जल्दी मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मांतर का पापों का बोझा है, वह खलास हो. माया कितने भी संकल्प, विकल्प के तूफ़ान लाये, लेकिन बहादुर बन, जीवन के अन्तिम श्वास तक बाप को याद करना ही हैं.

- बाप आये ही है घर ले चलने के लिए सब आत्माओं को. तुम जितना बाप को याद करेंगे उतना तुम पवित्र बनते जायेंगे. पूरा पवित्र बन जायेंगे तो सजायें नहीं खानी पड़ेगी और स्वर्ग में पद भी ऊँच प्राप्त होगा.

- बाप कहते है - तुम सब सितायें हो. मैं हूँ राम. सब भक्तों का सद्गति दांता मैं हूँ. बाबा तुम सब बच्चों की सद्गति कर देते हैं. बाकी सब आत्माये मुक्तिधाम में चली जायेंगी.

- बाबा कहते है - मैं तो कभी साँवरा नहीं बनता हूँ. तुम साँवरे से सुन्दर बनते हो. सदा सुन्दर तो एक ही मुसाफिर हैं. तुम सबको सुन्दर बनाकर साथ में ले जाते हैं. तुम बच्चों को सुन्दर बन फिर औरो को भी सुन्दर बनाना हैं.

जिसके लिए हम भक्ति में बार-बार पुकारते थे - हे पतित-पावन आओ, हमें इस नर्क से निकालो. वही शिवबाबा ने आकर हमें ज्ञान दिया की हम आत्माये कैसे उनकी याद से पावन बन सकती है और हम पावन आत्माओं को वही मुक्तेश्वर बाप अपने नैनों पर बैठाकर साथ ले जायेंगे. तो हमें इस शरीर छोड़ ने का भय अभी नहीं है, क्योंकि जब हम अपना शरीर छोड़ेंगे तो हमें मालूम है कि हमारा स्वागत करने वाला बाबा हैं. बाबा हमें अपनी गोदीं में उठा लेगा. कितने भाग्यशाली आत्माये है हम.

अन्तिम पुरुषार्थ सदा याद रहे की - बाबा के साथ घर जाना है, फिर श्रीकृष्ण के साथ सतयुग में आना हैं.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com .